The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

Title	Abhimanyu Unnat’s writing and importance of his novel LAAL PASEENA
Author(s)	Singh, Ved Prakash
Citation	外国語教育のフロンティア. 2025, 8, p. 33-37
Version Type	VoR
URL	https://doi.org/10.18910/100881
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

Abhimanyu Unnat's writing and importance of his novel LAAL PASEENA

अभिमन्यु अनत का रचना-संसार और लाल पसीना का महत्त्व

Singh, Ved Prakash

Abstract

In this article, I tried to show Abhimanyu Unnat's literary importance and historical relevance of his novel LAAL PASEENA. (red sweat). This title's symbolic meaning is a combination of blood and sweat after hard work. After the abolition of slavery in 1833 Britishers started a new rule for migrant labourers to five years in Mauritius. Hundreds of thousands of Indians were taken to Mauritius in five decades. After reaching Mauritius all Indian labourers were forced to work in bad conditions. There were so many inhuman rules imposed on them.

Abhimanyu Unnat has written 32 novels, 8 story collections, 4 poem collections, and many more books. His books are now very important documents of Indian migrant literature in Mauritius.

In his all novels and other writing Abhimanyu Unnat presented history of migrant labourers in Mauritius. Apart from his focus about historical pain of Indian migrant labourers in Mauritius he has written poems and novels about present days problems in society.

Keywords: migrant literature, bondage labourer, exploitation, struggle, Mauritius

अभिमन्यु अनत का संक्षिप्त परिचय

हिंदी साहित्य में भारत से बाहर रह रहे हिंदी लेखकों पर इन दिनों काफी शोध-कार्य हो रहा है। हिंदी में इस तरह के लेखन को प्रवासी-लेखन कहा जा रहा है। प्रवासी-लेखन में कई प्रकार की श्रेणियाँ बन चुकी हैं। पहली प्रकार की श्रेणी उन प्रवासी-लेखकों की है जो उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में अंग्रेजों द्वारा गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, गुयाना और त्रिनीटाड आदि देश ले जाए गए लोगों के वंशज हैं। दूसरी श्रेणी में ऐसे लोग आते हैं जो अच्छे अवसरों की खोज में विदेश में बस गए और उन्होंने हिंदी में रचनाएँ लिखीं अथवा उनकी संतानें हिंदी में लेखन कर रही हैं। तीसरी श्रेणी में ऐसे प्रवासी-लेखक हैं जो कुछ वर्षों के लिए विदेश में रहकर वहाँ लेखन करके भारत लौट आए हैं। इन तीनों श्रेणियों के लेखन को आजकल प्रवासी-साहित्य की नई श्रेणी बनाकर शोध-कार्य हो रहा है। कुछ विद्वान इन तीनों श्रेणियों को कमाधिक महत्त्व देने और इनके अलग-अलग नामकरण के पक्ष में हैं।[1]

सर्वाधिक लोकप्रिय प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त, 1937 ईसवी को त्रिओले, मॉरीशस में हुआ था। अभिमन्यु अनत ने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में जो सहयोग किया है, वह अतुलनीय है। अभिमन्यु के पूर्वज अन्य भारतीयों के साथ अंग्रेज़ों द्वारा वहाँ गन्ने की खेती में श्रम करने के लिए गिरमिटिया मजदूरों के रूप में लाए गए थे। मज़दूरों के रूप में गए भारतीय

वहीं पर बस गए। 12 मार्च 1968 को अंग्रज़ों के शासन से मॉरीशस मुक्त हुआ। अभिमन्यु अनत की पारिवारिक पृष्ठभूमि ने उन्हें हिन्दी की सेवा के लिए प्रोत्साहित किया और उन्होंने अपने पूर्वजों की मातृभूमि का ऋण अच्छी तरह से चुकाया। मॉरीशस के महान लेखक अभिमन्यु अनत ने हिन्दी कविता में भी नए विषय और भावबोध को जोड़ा। उनकी कविताओं का भारत के हिन्दी साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

अभिमन्यु अनत का रचना-संसार

साहित्य की विभिन्न विधाओं में 60 से अधिक पुस्तकों के रचयिता श्री अनत का उपन्यास 'लाल पसीना' कालजयी कृति के रूप में विख्यात हो चुका है। उपन्यास के क्षेत्र में अभिमन्यु अनत को 'मॉरीशस का उपन्यास सम्राट" कहा जाता है। उनके अभी तक 29 उपन्यास छप चुके हैं। पहला उपन्यास 'और नदी बहती रही' सन 1970 में छपा था तथा उनका नवीनतम उपन्यास 'अपना मन उपवन' है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'लाल पसीना' सन 1977 में छपा था, जो भारत से गए गिरमिटिया मज़दूरों की मार्मिक कहानी है। उनके उपन्यासों के नाम हैं- 'और नदी बहती रही' (1970), 'आंदोलन' (1971), 'एक बीघा प्यार' (1972), 'जम गया सूरज' (1973), 'तीसरे किनारे पर' (1976), 'तपती दोपहरी' (1977), 'लाल पसीना' (1977), चौथा प्राणी' (1977), कुहासे का दायरा' (1978), 'शेफाली' (1979), 'हड़ताल कल होगी' (1979), 'चुन चुन चुनवा' (1981), 'अपनी ही तलाश' (1982), 'अपनी अपनी सीमा' (1983), 'पर पगडंडी नहीं मरती' (1983), 'गांधी जी बोले थे' (1984), 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' (1985), 'फैसला आपका' (1986), 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' (1987), 'शब्दभंग' (1989), 'अचित्रित' (1990), 'और पसीना बहता रहा' (1993), 'लहरों की बेटी' (1995), 'घर लौट चलो वैशाली' (1995), 'चलती रहो अनुपमा' (1998), 'आसमान अपना आँगन' (2000), 'अस्ति-अस्तु' (2003), 'एक और उम्मीद' (2003), 'हम प्रवासी' (2004), 'क्यों न फिर से' (2004), 'अपना मन उपवन' (2006) और 'मेरा निर्णय' (2010)।

इन बत्तीस उपन्यासों के साथ-साथ अभिमन्यु अनत जी ने लगभग दो सौ कहानियाँ भी लिखी हैं जो उनके आठ कहानी-संग्रहों में संगृहीत हैं। इनके नाम हैं- 'खामोशी के चीत्कार' (1976), 'इंसान और मशीन' (1976), 'वह बीच का आदमी' (1981), 'एक थाली समंदर' (1988), 'अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ' (2002), 'मातमपुरसी' (2007), 'अब कल आएगा यमराज' (2010) और 'बवंडर बाहर-भीतर' (2011)। इन आठ कहानी-संग्रहों के साथ-साथ अभिमन्यु अनत जी ने छह नाटक भी लिखे हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं- 'विरोध' (1977), 'तीन दृश्य' (1981), 'गूँगा इतिहास' (1984), 'रोक दो कान्हा' (1986), 'भरत सम भाई' (1990) और 'देख कबीरा हाँसी' (1995)। उनके चार कविता-संग्रहों ने नाम इस प्रकार हैं– 'नागफनी में उलझी साँसें' (1977), 'कैक्टस के दाँत' (1982), 'एक डायरी बयान' (1985) और 'गुलमोहर खौल उठा' (1995)। इनके अलावा अनत जी ने दो जीवनियाँ, छह एकांकियाँ, तीन यात्रा-वृतांत पुस्तकें और 'यादों का पहला पहर' शीर्षक से अपनी आत्मकथा भी सन् 2005 में लिखी। इनके साथ ही 'मॉरिशस की हिन्दी कविता' और 'मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि' आदि काव्य-संग्रहों का कुशल संपादन किया है।

लाल पसीना उपन्यास की कथा और उसका महत्त्व

लाल पसीना उपन्यास उन भारतीय मजदूरों के जीवन संघर्ष की कहानी है, जिन्हें अंग्रेज सोने का लालच देकर मॉरिशस ले जाते थे। और उनसे वहाँ गन्ने की खेती करवाई जाती थी। किसनसिंह, कुंदन और मदन इस उपन्यास के केन्द्रीय पात्र हैं। वे अपने ऊपर होने वाले शोषण के सहने से इनकार करते हैं और लोगों को एकजुट करके मॉरीशसभर में गिरमिटिया मजदूरों के ऊपर होने वाले शोषण को भी खत्म करना चाहते हैं।

लाल पसीना उपन्यास की शुरुआत मॉरीशस द्वीप बनने की प्राकृतिक घटना से होती है। बुद्ध का संदेश सुदूर देशों में पहुँचाने निकले दो बौद्ध भिक्षु एक ज्वालामुखी विस्फोट को महासागर में घटित होते देखते हैं और वहीं तेज लहरों में उनकी नाव डूब जाती है। इसके बाद यह द्वीप बंजर और निर्जन ही बना रहता है। अनेक देशों के लोग यहाँ से गुजरे लेकिन जब भारत में फ्रांस और ब्रिटेन के उपनिवेशवादियों की लड़ाई चल रही थी, उस समय यहाँ भारतीयों का आना शुरू हुआ। 1833 में दास प्रथा के समाप्त हो जाने के बाद पाँच-पाँच साल का एग्रीमेंट करके भारत से मजदूरों को यहाँ लाया गया। उनका खून-पसीना बहाकर उनसे यहाँ गन्ने की खेती करवाई गई। इसी से लाल पसीना उपन्यास का नामकरण हुआ है। इसमें कई पीढ़ियों की शोषण-कहानी कही गई है। इसीलिए इस उपन्यास में अनेक पात्र भी हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख नाम हैं- किसन, मदन, मीरा, कुंदन, विवेक, मंगरु, रूपलाल, रामदेव, रघु सिंह, धनलाल, लखन, सोमा, संतु, सोहना, गोपाल, फरीद, सोनालाल, कोसला, फूलवंती, पुष्पा, सीता, रेखा, आन्द्रेआ, विनय सरदार, राम जी सरदार, जीतुआ सरदार, हरखू सरदार, रेमो साहब, मोरेल साहब, रोला व फिलिप सरदार आदि।

रघु सिंह अपने ऊपर होने वाले शोषण को लगातार सहने के पक्ष में है। किसन एक आधुनिक पात्र है। उसका मानना है कि आदमी जिस दिन प्रश्न करना छोड़ देता है, उसकी मृत्यु उसी दिन हो जाती है। किसन युवक है और कुन्दन की तुलना में उसमें अत्यधिक उत्साह है। वह अपने मज़दूर साथियों की विकट स्थिति को परिवर्तित करने का प्रण लेता है। किसन अपने हर प्रश्न को गंभीर मानकर चलता है जबकि उसके पिता, रघुसिंह अपने बेटे की इस प्रवृत्ति को नादान मानते हैं।

रोज होने वाले शोषण को झेलते हुए लोग मरते हैं। ऐसे मजदूरों की संख्या ही इस उपन्यास में अधिक है। फिर भी शोषण के अनेक रूपों को सहते हुए इससे मुक्ति के प्रयास भी दिखते हैं।

इस उपन्यास ऐसे भी गिरमिटिया मजदूर हैं जो अंग्रेजों के साथ मिलकर अपने ही साथियों का शोषण करते हैं। हरखू सरदार, रामजी सरदार, जीतुआ सरदार और विनय सरदार इस प्रकार के पूर्व शोषित और वर्तमान में शोषक हैं। वे पहले गिरमिटिया मजदूर बनकर आए लेकिन जमीन के लोभ में वे अपने ही देशभाइयों और बहनों का शोषण करते हैं।

लाल पसीना उपन्यास का एक सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि इस उपन्यास ने हिंदी समाज में अलक्षित इतिहास को पूरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। 1977 में इस उपन्यास के प्रकाशित होने के बाद भारत और भारत से बाहर के हिंदी समाज में इसका भरपूर स्वागत हुआ। मॉरीशस द्वीप बनने से लेकर वहाँ पर भारतीयों को लाए जाने का जीवंत इतिहास भी इस उपन्यास से मालूम चलता है।

उन्नीसवीं सदी के मध्य से लेकर 1968 तक कई पीढ़ियों ने अनिर्वचनीय शोषण सहे। उन सभी शोषणों की हल्की झलक इस उपन्यास में चित्रित की गई है।

"जतन ने घर पहुँचकर उसने अपने हाथों से उसके कोड़ों से कटे भागों पर मरहम लगाया था। पड़ोस से आए हुए भात को उसने हाथ से उसे खिलाया था। उस समय अपनी गहरी चोट के बावजूद जतन ने तख्ते से 'आल्हा' उतारा था उदल-ब्याह का भाग गाने लगा था। ऊपर से छलनी हुए उस आदमी के स्वर में उस समय भी भोज था। लेकिन इसके साथ ही जिस विडंबना पर कुंदन को दुखद आश्चर्य हुआ, वह साहस के गान करनेवाले उस आदमी की निरीहता थी।"[2]

एक बंजर द्वीप को हरे-भरे द्वीप में बदलकर उसमें गन्ने की खेती बड़े पैमाने पर करने वाले मजदूरों को दिन भर पीने के लिए पानी भी नहीं दिया जाता था। अगर वे अपनी झुकी हुई कमर को थोड़ा सीधा करके आराम करने लगते तो उन्हें गालियाँ सुननी पड़ती थीं। इसके लिए उन्हें कोड़े भी मारे जाते थे।

लाखों भारतीय मजदूरों को अमानुषिक शोषण सहना पड़ता था। उन्हें जानवरों की तरह समझा जाता था। "बस्ती के मजदूरों पर जो कुछ बीतता था, उसके सभी लोग आदी थे। उन बातों से किसी के बीच कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं थी। घटनाएँ इस तरह घट जाती थीं गोया आँगन में बैठे हुए कुत्ते पर अकारण ही कोई कंकड़ चला दे। कुत्ते के काँय-काँय करके दुम को टाँगों के बीच छिपा लेना जैसे रोज की साधारण बातें थीं, उसी तरह मजदूरों का कराहना था। बस्ती में कुंदन नया था। वह अकेला था जो इन घटनाओं का आदी नहीं था। उसके अकेले के लिए वे बातें भिन्न थीं। कुत्तों के काँय-काँय और आदमी के कराहने को वह अकेला था जो अलग-अलग देखता था।"[3]

इस उपन्यास में शोषित लोगों की संख्या बहुत बड़ी है तो शोषण के अनेक रूप भी देखने को मिलते हैं। जिन मालिकों के अधीन मजदूर खेतों में काम करते हैं उन मालिकों द्वारा मजदूरों की बहनें, बेटियाँ और पत्नियाँ अपमानित और बलात्कृत होती हैं। उनमें से कुछ इस अत्याचार के कारण आत्महत्या कर लेती हैं। "भगवती और ताँगेची ने आत्महत्या कर ली थी। दो और लड़कियों ने अपने को नदी की बहती धारा के साथ बह जाने दिया था। इन लड़कियों में से एक की लाख को नंदू खुद नदी से बाहर निकाल लाया था। किसन के यहाँ पहुँचने से कुछ ही देर पहले नंदू इस घर में बच्चों की तरह सिसकियाँ ले-लेकर उन तमाम बातों को याद कर रहा था। उसकी अपनी पत्नी पर भी साहब की आँखें थीं।"[4]

मजदूरों ने अपने ऊपर होने वाले शोषण से मुक्ति की कभी कोई कोशिश नहीं की। किसन उन्हें एकजुट करता है। रात में बैठक लगाता है। लोगों को खेत पर काम न करने के लिए तैयार करता है। हड़ताल करने के तीन दिन बाद ही सातों बस्तियों के लोगों से कुछ लोगों को बुलाकर उनकी माँगें सुनते हैं। सभी सातों लोगों ने रेमों साहब से अपनी माँगें रखीं। ये माँगें इतनी मानवीय और अनिवार्य हैं फिर भी इनके लिए उन्हें इतना कष्ट झेलना पड़ता है। अनेक गोरे मालिक भी इस बैठक में आए। "मालिकों ने एक-दूसरे को देखा। रेमों साहब ने सिर हिलाकर इजाजत दे दी। सातों व्यक्ति भूमि पर बैठ गए। किसन ने अपने साथियों के साथ भोजपुरी में एक क्षण के बातें कीं, फिर साहबों की ओर देखते हुए क्रिओली में कहा, "हमारी पहली माँग यह है कि हमें आदमी समझा जाए। बैल नहीं। हमारी मेहनत के बाद अगर हमारी पीठ नहीं थपथपाई जा सकती तो बदले में बाँसों की बौछार भी हमें नहीं चाहिए।"[5]

इसके बाद वे अपनी दूसरी, तीसरी और सभी माँगें बताते हैं। "दूसरी बात यह है कि हम बस्तियों के भीतर कैदियों की तरह नहीं सकते। हमें उस घिरावट से बाहर आने-जाने की स्वतंत्रता हो।"[6] इसके बाद वे अपनी अन्य माँगें बताते हैं- "हम स्वतंत्र रूप से अपनी पंचायत और बैठक लगा सकें।"..."हमारी चौथी माँग यह है कि हम अनाज और डाक्टर से वंचित नहीं रहना चाहते।"..."हमारी बहनों और बहू-बेटियों का आदर होना चाहिए।"..."हम सभी की अंतिम माँग यह है कि हमारे बच्चों को पढ़ने-लिखने का अवसर दिया जाए।"[7]

इन सभी मानव-अधिकारों के लिए अभी सात बस्तियों में रहने वाले मजदूरों ने हड़ताल की है। सात कोठियों के मालिकों ने तीन दिन बाद उत्तर देने की बात कही। मालिकों ने कोई भी माँग नहीं मानी। बस्तियों में महामारी फैलने से आधे लोग मर गए। डाक्टर और खाना लोगों को नहीं मिला। बाद में कुछ लोगों ने गोदाम से सामान लूट लिया।

शोषण और उसका किसी न किसी रूप में प्रतिरोध चलता रहा। इस काम में कई पीढ़ियाँ काम आईं। जिन लोगों ने संघर्ष शुरू किया था उनके स्थान पर उनसे बच्चे आ गए। एक शताब्दी से भी लंबे समय तक यह शोषण-चक्र चलता रहा। इस बीच अनेक जहाजों से नए गिरमिटिया मजदूर भी लाए जाते रहे।

आगे चलकर मदन इन शोषण-चक्र को खत्म करने की कोशिश करता है। उसे मार-मारकर अंधा कर दिया जाता है। पूरा उपन्यास एक अंतहीन दुस्वप्न की तरह पाठकों को एक के बाद एक शोषण-कथा से परिचित करवाता है।

जीवन को पूरी तरह से चित्रित करने के क्रम में प्रेम, ईर्ष्या, छल-कपट सब कुछ यहाँ दिखाया गया है। अभिमन्यु अनत ने इसमें भोजपुरी भाषा में गीतों के कुछ अंश भी दिए हैं। इन गीतों को सुख और दुख के क्षणों में मजदूर गाते हैं। इन गीतों में गोरे मालिकों के शोषण के प्रति शिकायत का भाव भी भरा हुआ है।

संदर्भ

1 प्रवासी लेखन: नयी ज़मीन नया आसमान, अनिल जोशी, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018, पृष्ठ 299

2 अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1977, पृष्ठ 45

3 अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1977, पृष्ठ 45

4 अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1977, पृष्ठ 122

5 अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1977, पृष्ठ 142

6 अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1977, पृष्ठ 143

7 अभिमन्यु अनत, लाल पसीना, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1977, पृष्ठ 144